Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

गृह प्रबंध में गृहिणी की भूमिका: एक विश्लेषण

Dr. Shikha Choudhary*

Head of Department (Home Science), Shree Krishna Mahila College, Begusarai

सारांश - *भारत में प्राचीन काल से ही गृह प्रबंध में कुशल गृहिणियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गृह प्रबंध एक सहज कार्य नहीं है। इसके लिए यह आवश्यक है कि कार्यों को सुव्यवस्थित ढ़ंग से किया जाय और विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक सावधानी बरती जाय। गृह प्रबंध एक मानसिक प्रक्रिया भी है। इसका अर्थ किसी कार्य को निष्पादित करना या पूरा करना मात्र नहीं होता है अपितु यह अत्यंत सूक्ष्म और कुशलतापूर्वक बनायी जाने वाली योजना है जिसमें परिवार के सभी साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों की संतुष्टि और अधिकतम लाभ के लिये किया जाता है। गृह प्रबंध अपने लक्ष्यों को तभी प्राप्त करता है जब पारिवारिक साधनों के आधार पर गृह कार्यों का आयोजन, संगठन, कार्यान्वयन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन हो। घर और पारिवारिक जीवन को सुदृढ़ बनाने में गृहिणी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गृह प्रबंध एक कला है और इसमें कुशलता व्यक्ति के बौद्धिक स्तर पर निर्भर करता है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो घर के अंदर निरंतर चलती रहती है। एक कला के रूप में गृह प्रबंध घर से ही आरंभ होता है। समकालीन परिवेश में भी घर प्रबंध का संपूर्ण दायित्व गृहिणी पर निर्भर है। यह किसी पारिवारिक व्यस्था के सुनियोजित और क्रमबद्ध विकास में सहायक होता है। गृहिणी की कार्यकुशलता और निपुणता गृह प्रबंध की प्रमुख कसौटी है। प्रस्तुत आलेख में गृह प्रबंध में गृहिणी की भूमिका का अध्ययन प्रस्तावित है।*

कुंजी शब्द - *गृहिणी, प्रबंध, बौद्धिक स्तर*

----------X----------

आलेख की रूपरेखा:

प्रस्तुत अध्ययन में गृह प्रबंध या गृह व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालन में गृहिणी की भूमिका का विश्लेषण और विवेचन किया जाएगा। गृह कार्यो के संपादन में एक गृहिणी किस प्रकार निपुणता से अपने दायित्वों का निर्वहन करती है, यह इसका मुख्य विषय है। अध्ययन में उन सभी तथ्यों और महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण किया जाएगा जो यह निर्धारित करता है कि गृह प्रबंध में गृहिणी की भूमिका आज भी उल्लेखनीय है और यह गृह व्यवस्था के सफल संचालन में एक प्रमुखा कारक है। प्रस्तुत अध्ययन में सुचनाओं और तथ्यों का संकलन मुख्यतः द्वितीय स्त्रोत से किया गया है। प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं, महत्वपूर्ण आलेखों और अनेक ग्रन्थों से प्राप्त तथ्यों को इस अध्ययन में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है।

सुव्यवस्थित घर उसी को समझा जाएगा, जहाँ परिवार के सभी व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों की पूर्ति से संतुष्टि और आनंद प्राप्त हो, आपस में विरोध, द्वेष, इर्ष्या आदि उत्पन्न न हो चाहे कार्य गृहिणी द्वारा संपादित किया जाए अथवा परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग से किया जाए। यदि परिवार के सदस्यों में पारिवारिक कार्यों से अंसतोष है, तो अधिक समय कार्य की बहस में ही समाप्त हो जाता है। अतः गृह प्रबंध का महत्व कार्य की समाप्ति से नहीं, बल्कि संतुष्टि से है।

गृह

साधरणतया विभिन्न सामग्रियो से निर्मित रहने के किसी स्थान को गृह या घर कहते हैं, पर, सूक्ष्म रूप से केवल ऐसे ही रहने के स्थान को घर कहते हैं, जहॉ पारिवारिक जीवन का वातावरण विद्यमान हो। ऐसे ही घर में हम सांसारिक दुःख, चिंता तथा व्याकुलता से अपने को मुक्त पाते हैं, सुख-शांति का अनुभव करते हैं क्योंकि उसमें अपनत्व की भावना प्रधान होती है। जीवन में सुख और दुख दोनो पहलू होते हैं, परंतु आपसी सहयोग और सद्भाव दुख को भी सुख में बदल देते हैं। परस्पर सहयोग से घर का सदस्य कर्मनिष्ठ होकर शारीरिक और मानसिक विकास करते हुए अपने चरम लक्ष्य पर पहुँच जाते हैं घर में माता-पिता भाई बहन और कभी-कभी कुछ रिश्तेदार भी एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक गृहस्थी की रचना करते है। एक गृहस्थी में नारी घर की विभिन्न क्रियाकलापों को करते हुए गृहिणी की मुख्य भूमिका निभाती है। हालांकि, आज स्त्री व

www.ignited.in

पुरूष संयुक्त रूप से घर व परिवार के दायित्वों का निर्वाह करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। महिलाएँ कामकाजी बन रही है अतः पुरूषो ने परिवार की भलाई के लिए दायित्वों के निर्वहन में भागीदारी लेनी शुरू कर दी है, किन्तु सम्पूर्ण गृह प्रबंध संबंधी वैज्ञानिक और व्यवहारिक ज्ञान एवं सुव्यवस्थित तौर तरीका के सफल कार्यान्वयन में गृहिणी के रूप में परिवार की स्त्री/महिला की भूमिका अद्‌वितीय है।घर, परिवार व संसाधनों के उचित उपयोग के लिए आवश्यक ज्ञान और प्रबंधकीय कौशल घर की गृहिणीयों में अधिक सुव्यवस्थित ढंग प्राप्त ज्ञात हुए है। घर वह स्थान है, जहाँ व्यक्ति सुख के साथ पारिवारिक जीवन व्यतीत करता है। सहयोग और सहानुभूति के साथ व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए अपने अधिकार, कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वों का पूर्ण पालन करता है। आराम से जीवन व्यतीत करने के लिए यह आवश्यक है कि घर में पर्याप्त स्थान हो जिससे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक सभी आवश्यकताएँ पूरी हो सके और साथ ही परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का पूर्ण विकास हो। ऐसा करने से व्यक्ति अच्छे नागरिक और समाज के कर्णधार होते है।

प्रबंधन

प्रबंधन या प्रबंध एक कला है और कला का अर्थ सौन्दर्य से है। प्रत्येक मुनष्य में सौन्दर्य की अनुभूति तथा प्रदर्शन की प्रवृति किसी-न-कसी रूप में रहती है। अच्छा या बुरा प्रबंध व्यक्ति की कार्यकुशलता का द्योतक है। यह कुशलता बौद्धिक शक्ति पर निर्भर करती है, यह हृदय की उपज नही है, यह एक आदर्श मानसिक प्रक्रिया है जो घर के अंदर निरंतर चलती रहती है। एक कला के रूप में गृह प्रबंध घर से ही प्रारंभ होता है। घर में अनेक कार्य होते हैं जिनको सुचारू रूप से करने के लिए गृह-प्रबंध का आश्रय लेना पड़ता है। प्राचीन ग्रन्थों में कई ऐसे गृहिणियों की चर्चा की गई है जो अपने घर को निपुणतापूर्वक तथा कुशलतापूर्वक चलाती थी। वर्तमान युग में गृह प्रबंध का वैज्ञानिक और व्यवहारिक दृष्टिकोण अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, जिसका प्रमुख कारण समय के मूल्य में वृद्धि, सीमित साधन और प्रबंधकर्त्ता के समक्ष बढ़ते हुए विविध कार्य हैं। एक कुशल गृहिणी घर की तमाम उत्तरदायित्व का वहन करती है। यदि गृहिणी अपना दायित्वो का निर्वहन नहीं करें तो परिवार और घर का विघटन हो जाता है।

गृह-प्रबंध या गृह व्यवस्थाः

गृह-प्रबंध या गृह व्यवस्था मे दो संयुक्त शब्द हैं, एक 'गृह' तथा दूसरा 'व्यवस्था' या 'प्रबंध'। गृह जो वास्तव में गृहिणी द्‌वारा तैयार होता है, जिसमें गृहिणी की सक्रिय भूमिका रहती है जबकि 'प्रबंध' या 'व्यवस्था' शब्द का व्यापक अर्थ है, जीवन के सभी स्तरों पर जीवन को व्यवस्थित करना। गृह प्रबंध का प्रमुख उद्‌वेश्य पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति करना है। निर्कल एवं डार्सी कहते हैं कि, "गृह-प्रबंध पारिवारिक साधनों के नियोजन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन है, जिसके द्‌वारा पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है।" अतः प्रबंध का अर्थ विचारपूर्वक की गई व्यवस्था से है जिनके द्‌वारा किसी भी परिस्थिति में समस्त उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग हो सके, अपनी अधिकतम इच्छाओं की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार कम से कम साधनों का प्रयोग कर अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त करने की विधियॉ गृह-प्रबंध है। भारत में प्राचीन काल से ही गृह प्रबंध में कुशल गृहिणियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गृह प्रबंध एक सहज कार्य नहीं है। इसके लिए यह आवश्यक है कि कार्यों को सुव्यवस्थित ढ़ंग से किया जाय और विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक सावधानी बरती जाय। गृह प्रबंध एक मानसिक प्रक्रिया भी है। इसका अर्थ किसी कार्य को निष्पादित करना या पूरा करना मात्र नहीं होता है अपितु यह अत्यंत सूक्ष्म और कुशलतापूर्वक बनायी जाने वाली योजना है जिसमें परिवार के सभी साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों की संतुष्टि और अधिकतम लाभ के लिये किया जाता है। गृह प्रबंध अपने लक्ष्यों को तभी प्राप्त करता है जब पारिवारिक साधनों के आधार पर गृह कार्यों का आयोजन, संगठन, कार्यान्वयन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन हो। घर की सुव्यवस्था का ध्यान, सुमधुर वातावरण का निर्माण तथा सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति का भार गृहिणी पर रहता है। गृहिणी अपने घर की स्वामिनी, बच्चों की माता, शिक्षिका एवं पति की सहयोगिनी होती है। गृहिणी ही घर की आधरशिला है। घर की कुशल व्यवस्था, परिवार की सुख-समृद्धि,संपन्नता यहॉ तक कि घर का अस्तित्व ही उस पर निर्भर करता हैं, वह घर की संचालिका और निर्देशिका होती है। परिवार में सुखद और दुखद अनेक अवसर आते हैं उनका सामना करना, समस्याओं को सुलझाना, परिवार की सुख, समृद्धि और संपन्नता गृहिणी की कार्यकुशलता और विवेकशीलता पर निर्भर करती है। गृहिणियों की कुशलता समायोजन और संतुलन की धुरी पर टिकी होती है। किसी परिस्थिति में कब, कहॉ और कितना समायोजित होना है यह बात एक कुशल गृहिणी अवश्यतः जानती है। कुशल और श्रेष्ठ गृहिणी वही है जिसमें ज्यादा से ज्यादा श्रवण (दूसरो को सुनने) की क्षमता हो तथा शब्दों के उचित तालमेल में व्यवहार निभाने की शैली हो। गृहिणी को एक अच्छी मनोवैज्ञानिक होना चाहिए ताकि वह पूर्वाभ्यास से परिस्थिति का सामना कर सके। समय प्रबंध, वित्तीय समझ और कोई भी परिस्थिति में निर्णय लेने की क्षमता होना कुशल गृहिणी का स्वभाव होता है। सौहार्दपूर्ण वातावरण किसी घर की उन्नति का प्रथम सोपना होता है।

इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी सदस्यों में आपसी तालमेल हो और उनमें सहनशीलता, निःस्वार्थता, विनम्रता, प्रबंधपटुता और क्षमा आदि गुणो हो। परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे की भावनाओं, दुख-सुख एवं परेशानियों को समझना चाहिए। इसमें, गृहिणी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है और वह परिवार अन्य सदस्यों के समक्ष अपना आदर्श व्यवहार प्रस्तुत करे तो अन्य सदस्य उसका अनुकरण करते है जिससे घर का वातावरण सुखद और आनन्ददायक हो जाता है। कुशल प्रबंध में आय-व्यय को संतुलित बनाना और बजट भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। घर की आवश्यकताओं की पूर्ति भी इन्हीं पहलुओं के अन्तर्गत होती है। अतः एक कुशल गृहिणी को घर की मासिक आय का पूरा विवरण हेाना चाहिए, घर की विभिन्न आवश्यकताओं की प्राथमिकताओं का ज्ञान होना आवश्यक है। बजट के अनुसार व्यय करने और प्रत्येक व्यय को लिखने से यह ज्ञात होता है कि व्यय बजट के अनुसार कार्य हो रहा है या नहीं। यदि बजट से अधिक व्यय हो तो उसके कारणों से अवगत होना तथा अगले बजट में उसी के अनुसार सुधार करना एक कुशल गृहिणी ही कर सकती है।

निष्कर्ष:

गृह कार्यों के कुशलतापूर्वक निष्पादन से तात्पर्य यह नहीं है कि प्रत्येक कार्य कुशलतापूर्वक ही संपन्न हो। यहाँ कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने का तात्पर्य किसी कार्य को सर्वोत्तम ढ़ंग से करने में समय, शक्ति और धन की बचत से है। किसी कार्य को करने की सर्वोत्तम विधि जानने से उस कार्य को कुशलता से किया जा सकता है। अतः कार्यों के लिए योजना निर्माण और उसका कार्यान्वयन, सदस्यों की कार्यक्षमता, रूचि एवं समय के अनुसार कार्य विभाजन यदि गृहिणी करे तो गृह प्रबंधन उत्तम हो सकता है और यह कार्य गृह प्रबंधन के वांछित उद्वेश्यों को प्राप्त करने में सहायक हो जाता है। प्रत्येक स्तर पर अनेक प्रकार के गृह कार्य होते है। घर की सफाई एवं सुव्यवस्थित करना, परिवार के लिए पौष्टिक भोजन तैयार करना एवं परिवार के लोगों को खिलाना, कपड़े बर्तन आदि की सफाई आदि ऐसे कार्य है जिन्हें करने में गृहिणी की भूमिका अहम होती है। बाजार से वस्तुएँ खरीदना, बच्चों को पढ़ाना, उसके मनोरंजन का प्रबंध करना, आय-व्यय का हिसाब रखना, घर के बुजुर्गों की देख-रेख करना आदि ऐसे आवश्यक कार्य हैं जिनको स्वयं गृहिणी करती है और इन कार्यों की सफलता और असफलता उसी पर रहता है।

स्त्रोत:

1. सिंह, डॉ वृंदा; गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जाः पंचशील प्रकाशन, जयपुर.
2. शर्मा अनुपम तथा वार्षणेय संगीताः इक्कीसवी शताब्दी में महिला समस्याएँ एवं संभावनाएँ, अल्फा पब्लिकेशन नई दिल्ली.
3. सिंह, वी.एन.: आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर.
4. Home Management: Meaning, Concept and Needs (2020)

Corresponding Author

Dr. Shikha Choudhary*

Head of Department (Home Science), Shree Krishna Mahila College, Begusarai